लोक सभा

सोमवार, 2 सितम्बर, 1996/11 भाद्र, 1918 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.03 बजे समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

[अनुवाद]

श्री तारीक अनवर (कटिहार) : महोदय, जन्मदिन मुबारिक हो।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : महोदय, जन्मदिन मुबारिक हो।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद।

पूर्वाह्न 11.04 बजे

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मुझे अत्यधिक दुःख के साथ सभा को अपने दो सम्मानित साथियों—श्री नाथू राम मिर्धा और श्री अशोक कुमार सेन के दुखद निधन की सूचना देनी है।

श्री मिर्धा, जो इस सदन के वर्तमान सदस्य थे, का निधन पचहत्तर वर्ष की आयु में 30 अगस्त, 1996 को नई दिल्ली में हुआ।

राजस्थान के नागौर जिले से संबंध रखने वाले श्री मिर्धा ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेजों के साथ-साथ सामंतवाद से भी संघर्ष किया। प्रमुख तौर पर किसानों की शक्ति के प्रतीक श्री मिर्धा लगभग पांच दशक तक अपने लोगों के निर्विवाद नेता रहे। वह वर्ष 1952 से 1967 तक तथा 1984 से 1989 तक राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे और उन्होंने राजस्थान सरकार में अनेक महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया। वर्ष 1972 से लेकर अब तक वह छह बार लोक सभा के सदस्य रहे। उन्होंने 1979-80 तथा 1989-90 में केन्द्रीय मंत्रिमंडल में रहकर भी सेवा की। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि मूल्य आयोग के सभापति के रूप में भी सुचारू रूप से कार्य किया।

वर्तमान सभा में वे कांग्रेस (आई) संसदीय दल के उपनेता भी थे।

श्री मिर्धा के निधन से स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों के एक जीवंत संपर्क सूत्र से संबंध विच्छेद हो गया है। कृषक वर्ग ने अपना उद्धारक और इस सदन ने ऐसा सदस्य खो दिया है जो लगभग हर बार इस सदन में हमारे बीच रहे हैं।

श्री अशोक कुमार सेन का निधन तिरासी वर्ष की आयु मे 31 अगस्त, 1996 को नई दिल्ली में हुआ।

ढाका और कलकत्ता में अपनी प्रारंभिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने लंदन के स्कूल ऑफ इकनामिक्स तथा लंदन के 'ग्रेज इन' से बार किया।

उन्होंने अपना जीवन कलकत्ता के सिटी कॉलेज में कानून की शिक्षा देते हुए प्रारंभ किया तथा बाद में कलकत्ता उच्च न्यायालय में प्रेक्टिस की। वे अपराधिक, वाणिज्यिक तथा अंतर्राष्ट्रीय कानून मे विशेषज्ञ थे।

उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्री विधान चन्द्र राय और श्री वी०के० कृष्णा मेनन की तरह आधुनिक भारत की प्रथम पीढ़ी के समसामयिक नेता के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। उत्तर-पश्चिम कलकत्ता के मतदाताओं में पैठ होने के कारण वह 1957 से 1979 तक तथा 1980—1989 तक लोक सभा के सदस्य रहे। वह अप्रैल 1996 तक राज्य सभा के सदस्य थे। वह पांच बार केन्द्रीय मंत्रिमंडल में केबिनेट स्तर के मंत्री रहे। लम्बे समय तक वह केन्द्रीय विधि मंत्री रहे जिसका कार्यभार उन्होंने बखूबी निभाया। अन्य विभाग जो उनके पास रहे उनमें संचार, इस्पात तथा खान शामिल हैं।

उन्होंने कई बार संयुक्त राष्ट्र और शिष्टमंडल में सुयोग्यता से भारत का प्रतिनिधित्व किया।

वे एक अच्छे पत्रकार भी थे। वे 1948 से लगभग एक दशक तक 'कलकत्ता लॉ जनरल' के सम्पादक रहे।

श्री अशोक सेन एक सुविख्यात शिक्षाविद, कानूनविद, संसदविद, कुशल प्रशासक, कूटनीतिज्ञ तथा प्रतिष्ठित विधि पत्रकार थे।

उनके निधन से हमने भारत के एक प्रतिष्ठित और बहुमुखी प्रतिभा संपन्न सपूत को खो दिया है।

हम इन अनुभवी महानुभावों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। मुझे विश्वास है कि यह सभा शोक संतप्त परिवारों को संवेदनाएं व्यक्त करने में मेरे साथ है।

प्रधान मंत्री (श्री एच० डी० देवेगौड़ा) : अध्यक्ष महोदय, श्री नाथू राम मिर्धा के निधन से इस देश के सार्वजनिक जीवन में रिक्तता आई है। श्री मिर्धा एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी और सुविज्ञ सांसद थे, जो लगभग आधी शताब्दी तक लोक सभा अथवा राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे। इस लम्बी अवधि के दौरान वे कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे, जैसे, चेयरमैन, राष्ट्रीय कृषि आयोग, सिंचाई, वित्त, खाद्य और नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री तथा कई संसदीय समितियों के सभापति।

उन्होंने किसानों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और समाज के अन्य कमजोर वर्गों के हितों के लिए अथक कार्य किया। कृषक समुदाय के लिए उनकी सेवाओं को लम्बे समय तक याद

किया जाएगा। श्री मिर्धा ने हाल ही के लोक सभा चुनाव खराब स्वास्थ्य के कारण बिना अपने निर्वाचन क्षेत्र का दौरा किए अच्छे अन्तर से जीता, जो कि आम लोगों में उनकी प्रसिद्धि को दर्शाता है।

पेशे से वकील श्री मिर्धा ने कई शैक्षणिक संस्थान तथा होस्टल स्थापित कर शिक्षा के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान प्रदान किया। मैं अपनी तथा अपनी सरकार की ओर से स्वर्गीय मिर्धाजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि शोक संतप्त परिवार को हमारी हार्दिक संवेदनाएं सम्प्रेषित करें।

हम श्री अशोक कुमार सेन के निधन पर भी गहन शोक व्यक्त करते हैं, जो दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं और आठवीं लोक सभा के सदस्य थे। वह एक लब्ध प्रतिष्ठ न्यायविद थे जो उत्तरोत्तर प्रधान मंत्रियों के कार्यकाल में केन्द्र में कई वर्षों तक विधि मंत्री रहे। वह सर्वोच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ अधिवक्ता थे तथा सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के लगभग एक दशक तक अध्यक्ष रहे। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के विधि सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव अधिकार सम्मेलन तथा कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया। अभी तक वे राज्य सभा के सदस्य थे। श्री सेन ने कई पुस्तकें लिखीं। वे 'कलकत्ता लॉ जनरल' के सम्पादक थे। महोदय, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि श्री सेन के शोक संतप्त परिवार को हमारी हार्दिक संवेदनाएं संप्रेषित करें।

श्री जसवंत सिंह (चित्तौड़गढ़) : अध्यक्ष महोदय, जब संसद अपने साप्ताहिक अवकाश पर थी उस समय मौत ने हमारे बीच से भारतीय लोकतंत्र के दो दिग्गजों को छीन लिया है।

मैं उन दोनों को, देश के भिन्न भागों— पूर्व और पश्चिम से होने के बावजूद अपने-अपने क्षेत्र में हमारे लोकतंत्र के प्रमुख शिल्पी मानता हूं जिन्होंने पहले प्रजातंत्र रूपी आधार की जगह बनाई और फिर वहां उसकी नींव रखी। यह एक भारी क्षति है क्योंकि माननीय श्री सेन के निधन से हमने एक विख्यात विधिवेत्ता खो दिया है और स्वर्गीय पंडित नेहरू के युग की एक कड़ी टूट गई है। हमारे ये साथी दूसरी लोक सभा से कैबिनेट स्तर के मंत्री रहे। उनका कानूनी अनुभव और गतिविधियां अपने आप में एक विश्वकोष थीं। मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से उनके निधन पर शोक प्रकट करता हू।

[हिन्दी]

नाथूराम जी मिर्धा के जाने से मारवाड़ का ही नहीं, राजस्थान का ही नहीं, मैं सोचता हूं कि भारत का एक सपूत चला गया। मेरे और नाथूराम जी के संबंध और मेरे परिवार और नाथूराम जी के संबंध आज के नहीं हैं, कई दशकों पुराने हैं। नाथूराम जी ने अपना राजनैतिक जीवन रामनिवास जी मिर्धा के पिताजी बलदेवराम जी के साथ शुरू किया, किसान संघ बनाकर शुरू किया। वे तत्कालीन जोधपुर रियासत के मंत्री बने। सन् 1948 से उन्होंने इस कार्यक्षेत्र में अपनी पहचान बनाई थी। उनके व्यवहार, उनकी बोली, उनकी समझ और पकड़ में हमारे मारवाड़ की बालू की सौंधी महक आती थी। वे राजस्थान के बनाने वालों में से एक थे। भारत में राजस्थान ही एक ऐसा प्रदेश है जहां पहली पीढ़ी के, सन् 1952 से जिन लोगों ने इस यज्ञ में आहुति देना शुरू किया, नाथूराम जी उसी श्रेणी में हैं। उनके जाने से हमारे लिए, राजस्थान के लिए एक बहुत आवश्यक कड़ी टूट गई है।

मैं इस अवसर पर आपने जो कहा, माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो कहा उन सभी भावनाओं के साथ अपने आपको, अपनी पार्टी को जोड़ते हुए श्री अशोक सेन और नाथूराम जी के परिवारजनों को अपनी पूरी सहानुभूति और सांत्वना प्रकट करना चाहता हू।

[अनुवाद]

श्री पी० वी० नरसिंह राव (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, यह अति दुख का विषय है कि पिछले 24 घंटों के दौरान हमारे दो वरिष्ठ साथी हमसे बिछुड़ गए हैं। श्री नाथूराम जी वास्तव में ऐसे नेता थे जिन्होंने निचले स्तर से कार्य आरम्भ किया था और सारी जिन्दगी निर्भीक बने रहे। उन्होंने कभी अपने विचार नहीं बदले अथवा कभी अपनी बात से कभी नहीं फिरे। उनमें पुरानी पीढ़ी के गुण विद्यमान थे। इन्हीं गुणों के कारण ही वे स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े जबकि उनको मालूम था कि ब्रिटिश सरकार और तत्कालीन राज्य प्रशासन सिर्फ उन्हें जेल, लाठी और यातनाएं ही देगा जिनका मुझे भी कुछ-कुछ अनुभव है।

वे पिछले कुछ वर्षों से बीमार चल रहे थे। उन्होंने 'बाईपास' करवाया था और स्वस्थ होने में उनको आमतौर पर जितना समय लगता है उससे कहीं अधिक समय लगा। मैं उनको कई बार हस्पताल देखने गया था। वह प्रसन्नचित थे। उन्होंने एक दिन अचानक मुझे बुलवाया। मैं वहां गया। वहां पर एक अजीब घटना घटी। उनको पूर्वाभास हो गया था कि वे चुनावों तक जिन्दा नहीं रहेंगे। उन्होंने मेरे समक्ष एक नामांकन पत्र रखा और कहा:

[हिन्दी]

"राव साहब, आप इस पर दस्तखत कर दीजिए और अपने दौरे पर चले जाइए। नागौर से आप मेरी जगह सांसद बनेंगे।"

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय, मैं भावविभोर हो गया। मैं कुछ नहीं कर सका। मैंने सिर्फ इतना कहा कि "कृपया इस बारे में विचार करिए और मुझे भी विचार करने दीजिए। मैं कल आऊंगा।" दूसरे दिन मैंने उनको बड़ी मुश्किल से समझाया कि उनको स्वयं ही चुनाव लडना चाहिए। उनको अपने निर्वाचन क्षेत्र में स्वयं जाने की आवश्यकता नहीं है और सभी को यह बात मालूम है कि वे गए भी नहीं। इसलिए, वे बहुत मुश्किल से माने और आशा के अनुसार बिना चुनाव क्षेत्र में जाए ही बहुत अधिक वोटों की संख्या से जीत गए।

महोदय, ऐसे व्यक्ति बहुत ही विरले होते हैं जिन पर आप आजीवन